तर्ज--तू प्यार का सागर है

पिया मेहर के सागर है,बस मेहर ही करते है
हम चाहें बदल जायें,कभी वो ना बदलते है

1--संसार मे आकर के,हम भूल गये उनको
मुहं फेर के बैठे है,हम पीठ दिये जिनको
वह कौन कहां के है,आये क्यों जहां में है

2--हम भूले भटको को ,सही राह पे लाते है
घर छोड़ के दर दर की,हाय ठोकरें खाते है
इलजाम सहे लेकिन,पीछे नही हटते है

3--हम सब अंगना उनकी,वह धाम धनी हमरे
गुण कैसे गाऊं मैं ,बलिहार पिया तुमरे
नासमझ हूं माफ करो,चरणों के सहारे है

Nijanand App